War: A Spectacular, Bloody Projection Of Ourselves	**युद्ध : दैनिक जीवन का ही बड़ा व्यापक और खूनी प्रक्षेपण**
War is merely an outward expression of our inward state, an enlargement of our daily action. It is more spectacular, more bloody, more destructive, but it is the collective result of our individual activities. Therefore you and I are responsible for war, and what can we do to stop it? *The First and Last Freedom*, Q. 10	युद्ध हमारी आंतरिक अवस्था की ही एक बाह्य अभिव्यक्ति है, वह हमारे दैनिक कर्म का ही एक विस्तार है। यकीनन वह और अधिक व्यापक, अधिक नृशंस, अधिक विध्वंसक है, परंतु है वह हमारी व्यक्तिगत क्रियाओं का ही सामूहिक परिणाम। अतः आप और मैं ही युद्ध के लिए ज़िम्मेदार हैं। अब प्रश्न है कि हम उसे रोकने के लिए क्या कर सकते हैं? (प्रथम और अंतिम मुक्ति, प्रश्न 10)
One wonders, if one is at all serious, why man kills another human being—in the name of God, in the name of peace, in the name of some ideology, or for his country, whatever that may mean, or for the king and the queen, and all the rest of that business. Man has lived on this earth which is being slowly destroyed, and why cannot he live at peace with another human being? Why are there separate nations, which is after all glorified tribalism? And religions are also at war with each other. Ideologies, whether it is the Russian or the American or any other ideology, are all at war with each other, in conflict. And after living on this earth for so many centuries, why is it that man cannot live peacefully on this marvellous earth? This question has been asked over and over again. An organization like this has been formed round that. What is the future of this particular organization? What lies beyond its fortieth year? So it behoves us to ask ourselves whether we as human beings can live peacefully with each other, in a community or in a family. *Talk to the United Nations 'Peace on Earth' Committee, 1985*	अगर कोई व्यक्ति पूरी तरह से गंभीर है तो उसे आश्चर्य ही होगा कि क्यों कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को भगवान के नाम पर, शांति के नाम पर, किसी आदर्शवाद के नाम पर, अपने देश या राजा और रानी या इसी तरह की किसी चीज़ के लिए मार डालता है। आदमी इस धरती पर रहता आया है जो धीरे-धीरे तबाह होती जा रही है पर वह अन्य मानवों के साथ शांति से क्यों नहीं रह सकता है? इतने अलग-अलग राष्ट्र क्यों हैं, सभ्यता की पोशाक में क्या यह कबीलावाद ही नहीं है? और धर्म भी आपस में टकरा़ते रहते हैं। विचारधाराएं चाहे जो भी हों, रूसी या अमेरिकन या कोई अन्य विचारधारा, सभी में अंतर्विरोध और आपसी युद्ध हैं। और जबकि मानव सदियों से इस धरती पर रहता आया है, वह इस अद्‌भुत धरती पर शांति से क्यों नहीं जी पाता? यह प्रश्न बार-बार पूछा जाता रहा है। इस तरह की संस्था इसी मुद्दे के इर्द-गिर्द बनाई गई है। इस विशिष्ट संस्था का भविष्य क्या है? इसके चालीसवें साल के बाद क्या होने वाला है? इसीलिए स्वयं से पूछना ही उचित है कि क्या हम एक मानव की तरह आपस में शांति से एक समुदाय या एक परिवार में रह सकते हैं? *टॉक टू द यूनाइटेड नेशन्स 'पीस ऑन अर्थ' कमेटी, 1985*

We precipitate war out of our daily lives; and without a transformation in ourselves, there are bound to be national and racial antagonisms, the childish quarrelling over ideologies, the multiplication of soldiers, the saluting of flags, and all the many brutalities that go to create organized murder. *Education and the Significance of Life,* Ch. 4	युद्ध हमारे प्रतिदिन के जीवन की ही नृशंस अभिव्यक्ति है, और यदि अपने इस जीवन में हम बदलाव नहीं लाते तो राष्ट्रीय और जातीय संघर्ष होते ही रहेंगे, विचारधाराओं को लेकर बचकाने झगड़े जारी रहेंगे, सैनिकों की संख्या बढ़ती ही जाएगी, झंडों की सलामियां तथा संगठित हत्या का कारण बनने वाली ये सारी क्रूरतायें जारी रहेंगी। शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य, अध्याय 4
We do not want to face these things, we do not want to face the fact that you and I are responsible for wars. You and I may talk about peace, have conferences, sit round a table and discuss, but inwardly, psychologically, we want power, position. We are motivated by greed, we intrigue, we are nationalistic, we are bound by beliefs, by dogmas, for which we are willing to die and destroy each other. Do you think such men, you and I, can have peace in the world? To have peace, *we* must be peaceful. Peace is not an ideal. *The First and Last Freedom,* Q.10	हम इस तथ्य का सामना नहीं करना चाहते कि आप और मैं युद्धों के लिए ज़िम्मेदार हैं। आप और मैं शांति के बारे में चर्चा कर सकते हैं, सम्मेलन बुला सकते हैं, एक मेज़ के चारों ओर बैठकर बहस कर सकते हैं, लेकिन अंदर से, मन ही मन हम शक्ति व पद चाहते हैं, लोभ से प्रेरित हैं। हम षडयंत्र रचते हैं, हम राष्ट्रवादी हैं, हम विश्वासों में, रूढ़ियों में जकड़े हैं, और उनके लिए हम मरने-मारने को तैयार रहते हैं। क्या आप सोचते हैं कि कभी ऐसे व्यक्ति, आप और मैं, विश्व में शांति ला सकेंगे? शांति लाने के लिए हमें शांतिपूर्ण होना होगा; शांति कोई आदर्श नहीं है। (प्रथम और अंतिम मुक्ति, प्रश्न 10)
Would you send your children to war if you loved them? You look after them till they are five so carefully, and after that you throw them to the wolves. That is what you call love. Is there love when there is violence, hatred, antagonism? *Beyond Violence,* Ch. 3	यदि आप अपने बच्चों से सचमुच प्रेम करते हैं तो क्या आप उन्हें युद्ध में भेजेंगे? पांच वर्ष की उम्र तक आप उनकी खूब सावधानीपूर्वक देखभाल करते हैं और बाद में उन्हें भेड़ियों के पास फेंक देते हैं। इसी को आप प्रेम कहते हैं। जहां हिंसा, घृणा और विरोध है, वहां क्या प्रेम हो सकता है? हिंसा से परे , अध्याय 3
Questioner: Are you telling me that this war is my doing? *Krishnamurti:* Yes, it's *your* responsibility. You have brought it about by your nationality, your greed, envy, and hate. You are responsible for war as long as you have those things in your heart, as long as you belong to any nationality, creed, or race. It is only those who are free of those things who can say that they have not created this society. Therefore our responsibility is to see that we change, and to help others to change, without violence and bloodshed.	**प्रश्नकर्ता :** क्या आप मुझसे यह कह रहे हैं कि यह युद्ध मेरा ही किया है? **कृष्णमूर्ति :** हां, इसके ज़िम्मेदार आप ही हैं। आपने ही इसे अपनी राष्ट्रीयता, अपने लालच, ईर्ष्या और घृणा से उत्पन्न किया है। जब तक आप उन चीज़ों को अपने दिल में जगह देते रहेंगे, जब तक आप किसी राष्ट्रीयता, धर्म, मत या जाति से संबद्ध रहेंगे, आप युद्ध के लिए ज़िम्मेदार होंगे। केवल वे लोग जो उन चीज़ों से मुक्त हैं, यह कह सकते हैं कि इस समाज की रचना उन्होंने नहीं की है। इसलिए, हमारी ज़िम्मेदारी यह देखना है कि हममें वह बदलाव

The Urgency of Change, Ch. 14	आए और दूसरों को अपने आप में बदलाव लाने में सहायक हों--बदलाव, बिना किसी हिंसा तथा रक्तपात के। अर्जेन्सी आफ चेन्ज, अध्याय 14
You have had in Europe two dreadful wars, with all the brutality, the exterminations of the concentration camps, the butchery, and yet you haven't changed. You are still Germans, Austrians, Russians, Catholics, and all the rest of it. So you have accepted that as the way of life, haven't you? Obviously. And can you voluntarily, sanely, put that away? Psychologically begin with that and see where it will lead you. Can one do that? *Talks and Dialogues*, Saanen 1967, D. 2	यूरोप में आपने दो भयावह युद्ध देखे हैं, जो अपनी निर्दयता, यातना शिविरों की सामूहिक हत्याओं तथा कसाईपने के साथ हुए हैं फिर भी आप अभी तक नहीं बदले। आप अभी तक जर्मन, ऑस्ट्रियन, रशियन, कैथोलिक और बाकी सब कुछ हैं। आपने उसे जीवन जीने के एक तरीके की तरह स्वीकृति दे दी है, आपने ऐसा नहीं किया क्या? ज़ाहिर है। और क्या आप स्वेच्छा से, समझ-बूझकर उसे एक तरफ हटा सकते हैं? मनोवैज्ञानिक रूप से इसके साथ शुरूआत कीजिए और देखिए कि यह आपको किधर ले जाएगा। क्या ऐसा करना मुमकिन है? टाक्स एण्ड डायलाग, सानेन 1967 डी 2
To put an end to outward war, you must begin to put an end to the war in yourself. Some of you will nod your heads and say, 'I agree', and go outside and do exactly the same as you have been doing for the last ten or twenty years. *The First and Last Freedom,* Q. 10	बाहर के युद्ध को समाप्त करने के लिए आपको अपने भीतर के युद्ध को खत्म करना होगा। आपमें से कुछ सहमति में अपना सिर हिलाएंगे और कह देंगे, ''मैं सहमत हूं,'' लेकिन यहां से जाकर ठीक वही करते रहेंगे जो आप पिछले दस या बीस सालों से करते आ रहे हैं। (प्रथम और अंतिम मुक्ति, प्रश्न 10)
An American lady came to see me a couple of years ago, during the war. She said that she had lost her son in Italy and that she had another son aged sixteen whom she wanted to save; so we talked the thing over. I suggested to her that to save her son she had to cease to be an American; she had to cease to be greedy, cease piling up wealth, seeking power, domination, and be morally simple—not merely simple in clothes, in outward things, but simple in her thoughts and feelings, in her relationships. She said, 'That is too much. You are asking far too much. I cannot do it because circumstances are too powerful for me to alter.' Therefore she was responsible for the destruction of her son. *The First and Last Freedom,* Q. 10	लगभग दो वर्ष पहले, युद्ध के दौरान, एक अमरीकी महिला मुझसे मिलने आई थी। उसने कहा कि वह इटली में अपना एक पुत्र गवां चुकी है, और उसका एक और पुत्र है जिसकी आयु सोलह वर्ष है और उसकी वह सलामती चाहती है; हमने उस बारे में बातचीत की। मैंने उसे सुझाव दिया कि अपने पुत्र को बचाने के लिए उसे अमरीकी पहचान के मोह को त्यागना होगा; उसे लालची होने से निजात पानी होगी, उसे संपत्ति संचित करना, शक्ति एवं अधिकार प्राप्त करना बंद करना होगा, और उसे नैतिक दृष्टि से सरल होना होगा--महज़ लिबास और बाहरी चीज़ों में ही नहीं, बल्कि विचारों, भावनाओं और अपने संबंधों में भी। उसने कहा, ''यह तो बहुत ज़्यादा है। आप बहुत ज़्यादा की मांग कर रहे हैं। मैं ऐसा नहीं कर सकती, क्योंकि हालात इतने ताकतवर हैं कि उनमें बदलाव लाना मेरे बस की बात नहीं।''

	इस प्रकार अपने पुत्र की बरबादी के लिए वही ज़िम्मेदार थी। (प्रथम और अंतिम मुक्ति, प्रश्न 10)
It was under this cloud of war hysteria that Krishnaji opened his series of Oak Grove talks in Ojai in May 1941. I was concerned for him and wondered whether under the unusual circumstances he would soften his anti-War remarks. He did not. He expressed his view as clearly and bluntly as if the War did not exist, lashing out at 'this mass murder called war' and proclaiming 'To kill another is the greatest evil.' He disarmed hostile questioners with a quiet, even gentle, reminder that their problem was not the person who disagreed with them but their own innate hostility. 'The war *within* you', he kept saying, 'is the war you should be concerned about, not the war outside.' At one point I expected a brawl to break out. I could not help but admire his 'cool' under these trying circumstances, and I wondered if he would be allowed by the officials keeping an eye on him to finish his talks. Men from the FBI were in the audience. *The Reluctant Messiah,* by Sidney Field	उस समय युद्धोन्माद के बादल घिरे हुए थे जब कृष्ण जी ने मई १९४१ में ओहाइ में ओक ग्रोव वार्ता की अपनी श्रृंखला शुरू की थी। मैं उनके लिए चिंतित था, और मुझे इस बात का शुबह था कि इस प्रकार के असामान्य वातावरण में वह अपने युद्ध–विरोधी वक्तव्यों में ढील देंगे या नहीं। उन्होंने कोई ढील नहीं दी। उन्होंने अपने विचार इतनी स्पष्टता और रुक्षता से प्रकट किए कि जैसे युद्ध की स्थिति हो ही न, ''यह सामूहिक हत्या जिसे युद्ध के नाम से जाना जाता है'' इन शब्दों के साथ इसकी भर्त्सना की तथा दूसरों की हत्या को सबसे बड़ी बुराई घोषित किया। उन्होंने आक्रामक प्रश्नकर्ताओं को अपने शांत और सभ्य प्रत्युत्तर से निरस्त कर दिया कि उनकी समस्या उस व्यक्ति से नहीं थी, जिससे वह असहमत थे बल्कि उनकी अपनी आक्रामकता से थी। वह हमेशा कहते रहे कि ''युद्ध आपके अपने अंदर है और आपका सरोकार इसी से होना चाहिए न कि बाहर के युद्ध से।'' किसी समय मैंने एक उपद्रव की भी उम्मीद की थी। मैं कोई सहायता नहीं कर सकता था बल्कि इन क्लेशकर परिस्थितियों में उनकी 'शांति' की प्रशंसा ही कर सकता था तथा मुझे शक था कि जो अधिकारी उन पर नज़र रखे हुए थे उन्हें अपनी वार्ता पूरी करने भी देंगे। **एफ बी आई** (जासूसी संस्था) के आदमी दर्शकों में थे। *द रिलक्टेंट मसीहा – सिडनी फील्ड*